पाठ 2.3 : कलातीर्थ : खैरागढ़ का संगीत विश्वविद्यालय

BCKI9S

डॉ. राजन यादव

डॉ. राजन यादव का जन्म 19 अक्टूबर सन् 1968 को कबीरधाम जिले के पीपरमाटी गाँव में हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा उनके गृह ग्राम, कंझेटा और कुण्डा में हुई। डॉ. यादव भक्तिकालीन हिंदी साहित्य और लोक साहित्य के विशेषज्ञ माने जाते हैं। उनकी प्रमुख प्रकाशित रचनाएँ ***तुलसी तरंग*** *(समीक्षा ग्रंथ)* ***विविधा*** *(साहित्यिक निबंध)* ***मध्ययुगीन हिंदी कविता में बसंत वर्णन*** *(शोध ग्रंथ) हैं।*

कलात्मक सौंदर्य का संबंध जीवन और समाज से होता है। युग की उपलब्धियाँ और सीमाएँ दोनों ही कला में उभरती हैं। इसलिए कला को भारतीय जीवन में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। यहां कला के विविध रूपों की साधना हमारी जीवन यात्रा की लम्बी और गौरवपूर्ण गाथा है। भारतीय संस्कृति जितनी पुरानी है, उतनी ही पुरानी इसकी कलाएँ हैं। भारतीय कला–चिंतन में कला को एक साधना माना गया है। प्राचीन आचार्यों ने कला को भक्ति से भी जोड़ा है। भर्तृहरि ने तो साहित्य संगीत और कला से विहीन मनुष्य को पूँछ और सींग से रहित साक्षात् पशु कहा है– 'साहित्य संगीतकला विहीनः, साक्षात् पशुः पुच्छविषाण हीनः।' भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता का एक कारण उसकी कलात्मकता भी है। संगीत आदि ललित–कलाएँ मानव जीवन को पूर्णता प्रदान करती हैं तथा मानवता को प्रांजल बनाती हैं। इनमें व्यक्ति का व्यक्तित्व तो भास्वर होता ही है, समष्टि–चेतना भी समन्वित रूप में बलवती हो उठती है। भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर इन्हीं कलाओं के संवर्धन और संरक्षण में इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ का योगदान अविस्मरणीय है। विगत छप्पन वर्षों में विश्वविद्यालय ने उन्नति के अनेक शिखर छुए हैं।

खैरागढ़ भारत के मध्य भाग में स्थित छत्तीसगढ़ राज्य के राजनाँदगाँव जिले के अंतर्गत आता है। यहाँ का ग्रामीण एवं शांत परिवेश विश्वविद्यालय की कला और कला–साधना में विशेष सहायक है। यहाँ रियासत कालीन कलात्मक व गुलाबी रंग के महल की अपनी विशेषता है। नागवंश के दानवीर राजा–रानी ने अर्धशती पहले जो संगीत की बगिया लगाई थी, उसमें आज संगीत ही नहीं, सभी ललित–कलाओं के बहुरंगी व बहुगंधी पुष्प विकसित हो रहे हैं।

खैरागढ़ राज्य और नागवंश के अतीत पर दृष्टि डालें तो खैरागढ़ के इतिहास का आरंभ खोलवा–परगना से होता है जिसे मण्डला के राजा ने लक्ष्मीनिधि कर्णराय को उनकी वीरता के लिए सन् 1487 ई में पुरस्कार स्वरूप दिया था। इन्हीं के चारण कवि दलपतराव ने इस क्षेत्र के लिए पहली बार छत्तीसगढ़ शब्द का प्रयोग अपनी कविता में 1497 ई. में किया था। स्व. लाल प्रद्युम्न सिंह रचित ग्रंथ 'नागवंश' के अनुसार वर्तमान खैरागढ़ में नागवंशी राजाओं के इतिहास का आरंभ राजा खड़गराय से हुआ। वे खोलवा राज्य के सोलहवें तथा नई राजधानी खैरागढ़ के प्रथम राजा थे। उन्होंने पिपरिया, मुस्का तथा आमनेर नदी के मध्य अपने नाम से एक नगर बसाया। उस नगर के चारों ओर खैर वृक्षों की अधिकता थी। इतिहासकार दोनों मान्यताओं से सहमत हैं कि राजा खड़गराय या खैर वृक्षों की अधिकता की वजह से नगर को खैरागढ़ कहा जाने लगा।

कालांतर में यहाँ के नागवंशी राजा उमराव सिंह व राजा कमलनारायण सिंह जैसे प्रजावत्सल, विद्यानुरागी, कलाप्रेमी तथा साहित्य सृजक राजाओं ने स्वास्थ्य तथा संगीत–कला पर विशेष ध्यान दिया। प्राकृतिक सौंदर्य और सांस्कृतिक वैभव से सम्पन्न इसी धरती के मनोहर प्रांगण में आज से छप्पन वर्ष पूर्व एक अपूर्व विश्वविद्यालय का अविर्भाव हुआ। गुरु–शिष्य परम्परा से पल्लवित संगीत की शिक्षा के लिए विद्यालयों की परिकल्पना भी बाल्यावस्था में थी, उसी समय तत्कालीन मध्यप्रदेश के अंतर्गत छत्तीसगढ़ में स्थित खैरागढ़ नगर को इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय की स्थापना का गौरव प्राप्त हुआ। यहाँ के राजा वीरेन्द्र बहादुर सिंह एवं रानी पद्मावती देवी की प्रसिद्धि सदैव मुस्काती रहेगी, जिन्होंने अपनी दिवंगत पुत्री 'राजकुमारी इंदिरा' की स्मृति में सम्पूर्ण राजभवन का उदारतापूर्वक दान करके इस विश्वविद्यालय की स्थापना की। 14 अक्टूबर 1956 ईस्वी में श्रीमती इंदिरा गाँधी ने इसका उद्घाटन किया। यहीं से मध्यप्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री पं. रविशंकर शुक्ल के सहयोग से एशिया के इस प्रथम एवं एक मात्र विश्वविद्यालय की स्वर्णयात्रा आरंभ हुई।

इस विश्वविद्यालय के प्रथम कुलपति पद्मभूषण पं. एस.एन. रातंजनकर का संगीत के आरंभिक पाठ्यक्रम बनाने में महती योगदान रहा। उन्होंने संगीत की शिक्षा को घरानों की चहारदीवारी से निकालकर संस्थागत किया। शास्त्र और प्रयोग को एक दूसरे के नजदीक लाने और जोड़ने का कार्य किया इससे गीत, संगीत और नृत्य की शिक्षा के प्रति समाज का दृष्टिकोण सकारात्मक हुआ।

वर्तमान में विश्वविद्यालय के शिक्षण विभाग द्वारा संगीतकला, चित्रकला, मूर्तिकला, छापाकला, लोककला तथा साहित्य संबंधी डिप्लोमा, स्नातक तथा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम संचालित हैं। यहाँ के बी.ए., बी.ए. (आनर्स) संगीत, नृत्य, लोकसंगीत तथा बी.एफ.ए., एम.ए., एम.एफ.ए. के पाठ्यक्रम रोजगारमूलक तथा जीवन पर्यंत उपयोगी हैं। यहाँ गायन पक्ष में– हिन्दुस्तानी गायन, कर्नाटक गायन, सुगमसंगीत तथा लोकसंगीत की प्रभावी शिक्षण व्यवस्था है। नृत्य पक्ष में– कथक, भरतनाट्यम तथा ओडिसी नृत्य की शास्त्रीय और प्रयोगात्मक शिक्षा दी जाती है। वाद्यपक्ष में तबला, वायलिन, सितार, सरोद, कर्नाटक बेला तथा लोकवाद्यों की शिक्षा दी जाती है। दृश्यकला के अंतर्गत चित्रकला, मूर्तिकला तथा छापाकला में स्नातकोत्तर तक की शिक्षा व्यवस्था है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) द्वारा स्वीकृत दो स्पेशलाइजेशन पाठ्यक्रम बैचलर ऑफ वोकेशन (बी.ओक.) फैशन डिजाइनिंग और टेक्सटाइल डिजाइनिंग का पाठ्यक्रम संचालित करने वाला यह एक मात्र विश्वविद्यालय है।

यहाँ कला संकाय में हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य के पाठ्यक्रम संचालित हैं। प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व तथा थियेटर की स्नातकोत्तर की पढ़ाई होती है। यहाँ पर्यावरण से लेकर दैनिक

जीवन में उपयोगी अनेक प्रकार की शिक्षा दी जाती है। विश्वविद्यालय में दर्जनों मनोरंजक तथा रोजगारमूलक डिप्लोमा तथा सर्टिफिकेट कोर्स संचालित हैं। विश्वविद्यालय में पाँच संकाय के बीस विभागों द्वारा संस्थागत, जीवन शिक्षण तथा व्यावसायिक शिक्षा दी जाती है। छत्तीसगढ़ का यह एक ऐसा विश्वविद्यालय है जिनके संबद्ध महाविद्यालय भारत के कई राज्यों में हैं। सम्पूर्ण भारत में 24 सम्बद्ध महाविद्यालय तथा 35 परीक्षा केन्द्रों में परिव्याप्त यह विश्वविद्यालय ललितकलाओं का गौरव स्तंभ है। यहाँ पी–एच.डी. तथा डी.लिट्. तक शोध–कार्य होते हैं। यहाँ से प्रकाशित उच्चस्तरीय शोध पत्रिकाएँ 'कलासौरभ' 'कला–वैभव' तथा 'लिटरेरी डिस्कोर्स' विश्वविद्यालय के गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के दर्पण हैं। यहां ललित कलाओं के सृजक–चित्रकार, मूर्तिकार, वास्तुकार, संगीतकार और काव्यकार सभी नवीन उद्भावनाओं को मूर्तरूप देने के प्रयास में संलग्न हैं।

ललितकलाओं की दृष्टि से यहाँ का ग्रंथालय भारतवर्ष में प्रथम है, जो पैंतालिस हजार से अधिक पुस्तकें, ऑडियो (श्रव्यताफोन, अभिलेख) और सी.डी., भारतीय चित्रकारों की विडियो स्लाइड्स, लोक एवं जनजातीय कलाकारों के कला नमूनों के उल्लेखनीय संग्रह से सुसज्जित है। ग्रंथालय में भव्य श्रव्यकक्ष है, जहाँ विद्यार्थी, शोधार्थी तथा कला–जिज्ञासु अपने विषय के अनुरूप महान कलाकारों के ऑडियो–विडियो कैसेट्स द्वारा ज्ञान अर्जन करते हैं। विश्वविद्यालय के संग्रहालय में कलात्मक अवशेषों का विपुल संग्रह है, जो देश के इस हिस्से की बहुविध समृद्ध संस्कृति को प्रदर्शित करता है। शास्त्रीय एवं लोकसंगीत के वाद्यों की कलावीथिका भी मनोहारी है। विश्वविद्यालय का शिक्षण तथा प्रशासनिक कार्य दो परिसरों में संपन्न होता है।

छत्तीसगढ़ का प्रथम तथा भव्य आडिटोरियम विश्वविद्यालय में ही स्थित है। अत्याधुनिक संसाधनों से युक्त 'रिकार्डिंग रूम' तथा 'लैंग्वेज लैब' की अपनी विशिष्टता है। हाइटेक कम्प्यूटर सेंटर तथा योग केंद्र की भी महती भूमिका है। देशी–विदेशी विद्यार्थियों, शोधार्थियों के लिए सुविधायुक्त कई महिला एवं पुरुष छात्रावास हैं। साथ ही बाहर से आने वाले अतिथियों के ठहरने के लिए अतिथिगृह की भी उत्तम व्यवस्था है। इतना ही नहीं, यहाँ का हरा–भरा परिसर कलासाधकों की साधना के लिए अनुकूल वातावरण निर्मित करता है।

इस उत्सवधर्मी विश्वविद्यालय में वर्षभर राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ, कार्यशालाएँ, उत्सव, प्रदर्शनियाँ आयोजित होती हैं। देश–विदेश के ख्यातिलब्ध कलाकार, साहित्यकार, नाटककार इस कलातीर्थ में आकर गौरव का अनुभव करते हैं। महान नृत्य गुरु पं. लच्छू महाराज, संगीत मर्मज्ञ ठाकुर जयदेव सिंह, प्रसिद्ध नृत्यांगना सितारा देवी, विश्व प्रसिद्ध सितार वादक पं. रविशंकर, भारत रत्न लता मंगेशकर, छत्तीसगढ़ माटी के विश्वविख्यात रंग निदेशक हबीब तनवीर, प्रख्यात कला विदुषी डॉ. कपिला वात्स्यायन, चित्रकला के पुरोधा सैयद हैदर रज़ा, विश्व प्रसिद्ध कलाकार जोहरा सहगल सदृश अनेक विभूतियाँ इस विश्वविद्यालय में मानद डी. लिट्. से सम्मानित हुई हैं।

इस कलातीर्थ में भारत के कई प्रांतों तथा श्रीलंका, पोलैण्ड, थाईलैण्ड, ऑस्ट्रिया, फिज़ी, तुर्की, मॉरिशस, नेपाल, अफगानिस्तान, मलेशिया आदि देशों से विद्यार्थी–शोधार्थी श्रद्धाभाव से आते हैं। अलग–अलग स्थानों से आए, भिन्न–भिन्न संस्कृतियों के विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम एवं शोध आवश्यकताओं की अपेक्षाएँ पूरी होती हैं। यहाँ की अनूठी प्रकृति विद्यार्थियों को भारत की समृद्ध पारंपरिक भारतीयता के ज्ञानार्जन की अनुभूति कराती है।

कलाकार को मनोनुकूल परिवेश के लिए ऐसे समाज की तलाश होती है जिससे बेगानेपन का भाव न हो और वह पड़ोस के समुदाय से भावनात्मक रूप से जुड़ सके। महात्मा गाँधी ने 23 नवम्बर 1924 में प्रसिद्ध संगीतज्ञ श्री दिलीपकुमार राय से कला के संबंध में बातें करते हुए कहा था–''कलाकार जब कला को कल्याणकारी बनाएँगे

और जनसाधारण के लिए सुलभ कर देंगे, तभी उस कला को जीवन में स्थान मिलेगा। जब कला लोक की न रहकर थोड़े लोगों की रह जाती है, तब मैं मानता हूँ कि उसका महत्व कम हो गया।''

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की भावना के अनुरूप इस कलातीर्थ के प्रथम कुलपति रातंजनकर हों या प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्रजी या रामकथा गायक व विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अरुण कुमार सेन हों, अब तक कार्यरत विश्वविद्यालय के समस्त कुलपतियों, शिक्षकों, संगीतकारों व कर्मचारियों ने इसके संरक्षण और संवर्धन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उत्थान से लेकर अब तक के 20वें कुलपति प्रो. डॉ. माण्डवी सिंह ने ललितकला को समर्पित इस विश्वविद्यालय के विकास में प्रभावी भूमिका का निर्वाह किया है। यहां राज्य सरकार के सहयोग से हर वर्ष 'खैरागढ़ महोत्सव' का भव्य आयोजन होता है जिसमें देश–विदेश के स्वनामधन्य कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय आज प्रदेश का पहला विश्वविद्यालय है जिसे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् (नेशनल एसेसमेंट एण्ड एक्रीडिटेशन काउंसिल) द्वारा 24 सितम्बर 2014 को विश्वविद्यालय को प्रत्यायित कर 'ए' दर्जा प्राप्त हुआ है। देश के प्रतिष्ठित संस्थान, रिक्रूटमेंट के लिए विश्वविद्यालय आते हैं जिसमें यहाँ के विद्यार्थी चयनित होते हैं। राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार व फैलोशिप प्राप्त शिक्षक, शोधार्थी तथा विद्यार्थी यहाँ की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए क्रियाशील हैं।

यहाँ से दीक्षित कलाकार देश–विदेश में भारतीय कला संस्कृति के ध्वजवाहक बने हुए हैं। क्योंकि कला राष्ट्र के जीवन का एक मुख्य अंग है, उससे ही हमारे जीवन को रस, सुकुमारता और सहृदयता का आहार मिलता है। आज अन्य देशों के लोगों ने अपनी जिस संस्कृति के आधार पर अपने आचार–विचार और समस्त जीवन को कार्यान्वित किया है, उससे वे ऊब रहे हैं, वे भारतीय जीवन की सरलता, मधुरता व उपयोगिता को अपनाने में सुख शांति का अनुभव कर रहे हैं। भारतीय कृतियों में आनंद को समस्त कलाओं का एकमात्र लक्ष्य माना गया है। स्वामी विवेकानंद के अनुसार 'समस्त काव्य, चित्रकला और संगीत, शब्द, रंग और ध्वनि के द्वारा भावना की ही अभिव्यक्ति है।' हमारी अवधारणा में मनुष्य कोई पदार्थ नहीं, पूर्ण चेतन है, जो परमेश्वर का ही सांस्कृतिक प्रतिनिधि माना गया है। यहाँ के कला साधक यही बोध कराने के लिए क्रियाशील हैं। गायन विभाग के पूर्व प्रवक्ता डॉ. अनिता सेन द्वारा रचित एवं स्वरबद्ध विश्वविद्यालय के कुलगीत में भी जनकल्याणकारी भावना प्रतिबिंबित होती है–

प्रतिपल जीवन नव कोणों में, विकसित होता जाए।
धन्य विश्वविद्यालय पावन, स्वर्ग धरा पर लाए।।

इस कलातीर्थ का ध्येय वाक्य है– ''सुस्वराः संतु सर्वेऽपि'' अर्थात् ''सभी सुन्दर स्वर वाले हों।'' कला के पथ पर निरंतर अग्रसर होते हुए हमारी समृद्ध संस्कृति का वाहक यह विश्वविद्यालय अपने ध्येय वाक्य की सार्थकता को सिद्ध कर रहा है।

शब्दार्थ

प्रांजल – खरा; सरल या शुद्ध, ईमानदार, समतल; **संरक्षण** – सहेजना; **संवर्धन** – समुचित रूप से बनना; **आलोकित** – प्रकाशित; **आविर्भाव** – उत्पन्न; **फल लगना** – फूलना; **कला वीथिका** – कला गलियारा; **पुरोधा** – आदिपुरुष।

अभ्यास

पाठ से

1. भारतीय संस्कृति को श्रेष्ठ क्यों माना गया है?
2. पाठ के आधार पर खैरागढ़ राज्य के इतिहास पर प्रकाश डालिए।
3. खैरागढ़ संगीत विश्वविद्यालय की स्थापना किस तरह हुई?
4. विश्वविद्यालय के कुलपति पं. एस.एन. रातंजनकर के योगदान को लिखिए।
5. खैरागढ़ विश्वविद्यालय में कौन–कौन से शिक्षण विषय उपलब्ध हैं?
6. टिप्पणी लिखिए–

   (क) ग्रंथालय (ख) ललितकला
7. इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय को कलातीर्थ क्यों कहा गया है?

पाठ से आगे

BCUEBF

1. कलाएँ हमारे जीवन को किस तरह खुशहाल व परिपूर्ण बनाती हैं?
2. ललितकलाएँ कौन–सी हैं और उन्हें ललितकलाएँ क्यों कहा गया है?
3. कलाकार क्या विशिष्ट व्यक्ति होते हैं या आप और हम भी कलाकार हो सकते हैं? आपस में विचारकर लिखिए।
4. विभिन्न कलाओं की शिक्षा प्राप्त कर आप किस तरह के रोजगार चुन सकते हैं? तालिका में लिखिए–

कला	व्यवसाय के क्षेत्र
उदाहरण– तबला–वादन	तबला वादक, तबला शिक्षक आदि।

5. कला 'स्वांतः सुखाय' भी होती है। कैसे? शिक्षक से पूछकर लिखिए।

भाषा के बारे में

1. 'भावना' स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द है इसमें जब 'आत्मक' प्रत्यय जुड़ेगा तो प्राप्त शब्द 'भावनात्मक' एक विशेषण शब्द होगा। इसी प्रकार निम्नांकित शब्दों में 'आत्मक' प्रत्यय जोड़कर विशेषण शब्द बनाइए–

   कला, व्याख्या, तुलना, रचना।

2. निम्नांकित शब्दों में कुछ अन्य शब्द जोड़कर नए शब्द बनाइए– जैसे साहित्य से साहित्य सम्मेलन

   (क) गायन (ख) परंपरा (ग) कला

3. पाठ के चौथे अनुच्छेद में दी गई जानकारी के आधार पर राजा वीरेन्द्र बहादुर और रानी पद्मावती के बीच एक संवाद लिखिए।

4. अपने मित्र को एक पत्र लिखिए जिसमें खैरागढ़ के संगीत विश्वविद्यालय की संक्षिप्त जानकारी दीजिए।

BD4AD3

(क) 'भावनात्मक' शब्द में 'आत्मक' प्रत्यय है ऐसे ही दस शब्द और बनाइए।

(ख) कल्याणकारी शब्द में 'कारी' प्रत्यय 'करने वाला' या करने वाली का बोध कराता है ऐसे ही आप 'कारी' प्रत्यय लगाकर दस नए शब्द बनाइए।

(ग) संस्कृत से मूल रूप में बिना परिवर्तित हुए हिंदी में लिए गए शब्दों को तत्सम शब्द कहते हैं। जैसे– कर्ण, अग्नि, इत्यादि। इस पाठ में आए तत्सम शब्दों की सूची बनाइए।

योग्यता विस्तार

1. संगीत में कितने स्वर होते हैं, उनके क्या–क्या नाम हैं पता लगाकर लिखिए।
2. पता लगाकर लिखिए कि एक गायक अन्य भाषा के गीतों को किस प्रकार आसानी से गा लेता है?
3. छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध शास्त्रीय गायकों एवं लोकगायकों की सूची बनाकर उनकी गायन शैली/विधा लिखिए।
4. रायगढ़ के चक्रधर समारोह के बारे में जानकारी एकत्र कीजिए और शाला की भित्ति पत्रिका में लगाइए।

BDD6EQ